इमाम बुख़ारी का नैपकिन

मुशर्रफ़ आलम ज़ौक़ी

Imam Bukhari Ka Napkin

by M.A. Zauqui

प्रकाशकः *पेंगुइन बुक्स, यात्रा बुक्स के सहयोग से*

प्रकाशितः *अगस्त 2007*

मुद्रणः *पेंगुइन*

मूल्यः *रु 160.00*

आई एस बी एनः *0143101005*

ऐडिशनः *पेपर बैक*

फ़ॉरमेटः *बी*

पृष्ठः *224*pp

वर्गीकरणः *कहानी-संग्रह*

क्षेत्र अधिकारः *विश्व*

- **Published by** Penguin Books India in association with Yatra Books
- **Published:** August 2007
- **Imprint:** Penguin
- **Special Price:** Rs.160.00
- **Cover Price:** Rs.160.00
- **ISBN:** 0143101005
- **Edition:** Paperback
- **Format:** B
- **Extent:** 224pp
- **Classification:** Anthology
- **Rights:** World

ज़ौक़ी की कहानियां दरअसल राजनीतिक और सामाजिक सरोकारों की कहानियां हैं, लेकिन हर बार अपने बोल्ड विषयों के कारण ज़ौक़ी की कहानियां अत्यधिक चर्चा में आ जाती हैं। इमाम बुख़ारी का नैपकिन, दरअसल भारत में स्वाधीनता और विभाजन की त्रासदी झेल रहे आम मुसलमानों की आत्मकथा है, जिनका राजनीतिक पार्टियां अपने-अपने वोट बैंक के आधार पर आसानी से दोहन अथवा शोषण करती और अंत में जूठे नैपकिन के टुकड़ों की तरह हाथ पोंछकर उन्हें गंदी नाली में फेंकती आई हैं। आम मुसलमानों की पीड़ा जिस सशक्त माध्यम व प्रतीकों द्वारा ज़ौक़ी की कहानियों में अभिव्यक्त होती है, वो इससे पहले बहुत कम देखने में आई थी। बाबरी मस्जिद और गुजरात हो या स्वतंत्रता के बाद सांप्रदायिक दंगों का काला इतिहास, ज़ौक़ी की विशेषता यही है कि वे केवल एक करुणामय और दारुण-गाथा सुनाकर आपको क्षणिक भावुक नहीं करते, बल्कि उन राजनीतिक सरोकारों को आज के सामाजिक सरोकारों से सीधे जोड़ते हैं। एक बड़े चिंतन का विषय बना देते हैं। इस दृष्टिकोण से देखें तो 'नैपकिन' से 'पिरामिड' तक की गाथा भारत केहाशिये पर फेंक दिए गए सारे मुसलमानों की आपबीती बन जाती है।

लेखक परिचय

मुशर्रफ़ आलम ज़ौक़ी, जन्मः 24 मार्च, 1962 आरा, भोजपुर। बचपन से ही लिखने की शुरुआत हो गई। पहला उपन्यास 'अक़ा न की आंखें' सत्रह वर्ष की उम्र में लिखा। ज़ौक़ी की कहानियों व उपन्यासों पर टेलीफ़िल्म व धारावाहिकों का बनना एक आम सी बात है। वे स्वयं भी पटकथा लेखन एवं फ़िल्म निर्माण से जुड़े हैं। बलवंत सिंह और सुहेल अज़ीमाबादी के प्रसिद्ध उपन्यासों पर भी वे धारावाहिकों का निर्माण कर चुके हैं।